भभभगग [दोधकमिच्छति भत्रितयाद् गौ Chm. 2. 51] दोधक, भित्तक.

भभरगग [भौ रो गौ रोचकम् H. 2. 127] रोचक.

मतजगग (4-7) [म्तौ ज्गौ गः स्यादब्धिनगैर्गुणाङ्गी अ० वृ० र० 11. 353] गुणाङ्गी.

मततगग (4-7) [विश्रामोऽब्धौ शालिनी मेन तौ गौ Jk. 2. 100] शालिनी.

मभतगग (4-7) [वातोर्मी माद्भतगा गेन युक्ता Jk. 2. 111] वातोर्मी, ऊर्मिमाला, वातोर्मिमाला.

मभनलग (4-7) [मात् भ्नौ ल्गौ चेद् भ्रमरविलसितम् Jk. 2. 101] भ्रमरविलसित.

मभभगग (4-7) [मो भौ गौ वा वातोर्मी H. 2. 137] वातोर्मी.

मभसगग [मभसा गौ पीनश्रोणिः Bh. 32. 202) पनिश्रोणि.

मममगग [मत्रितयाद् गौ मालती Pp. 2. 112] मालती.

मसजगग (6-5) [म्सौ ज्गौ गो रसखं सदैकरूपम् Jk. 2. 113] एकरूप, मणि, मेरुरूपा.

रजरलग [श्रेणिरभ्यभाणि राजरौ लगौ Jk. 2. 102] ताल, निःश्रेणिका, श्येनी (वैतिका), श्रेणि, सेनिका.

रजसलग (5-6) [रेण जेन सेन लगयोर्द्रुता Chm. 2. 63] द्रुता, रञ्जिता.

रनभगग [स्वागता रनभगैर्गुरुणा च Chm. 2. 50] दीपक, स्वागता.

रनरलग [रान्नरौ लगयुतौ रथोद्धता Jk. 2. 99] रथोद्धता.

रससलग [अच्युतं रससल्गुरुणोच्यते Jk. 2. 107] अच्युत.

सजयलग [सज्या ल्गौ सारणी H. 2. 153] सारणी.

सभरलग [सभरल्गैः अपरान्तिका भवेत् Jk. 2. 105] अपरान्तिका.

समनलग [स्मनल्गा विमला H. 2. 151] विमला.

सससलग [उपचित्रमिदं सससा लगौ Vr. 3. 43. 13] उपचित्र, विदुषी.

12 **जगती** (53)

जजजज [चतुर्जगणं वद मौक्तिकदाम Vr. 3. 64. 1] मौक्तिकदाम.

जतजर (6-6) [वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ Chm. 2. 66; गुहास्यर्तुभिर्यतिः Ckau. 2. 61] अभ्रवंशा, वंशस्था, वंशस्थविल, शुद्धविराट्.

जभजर [जभौ जरौ वदति पञ्चचामरम् Vr. 3. 64. 3] पञ्चचामर, प्रियंवदा.

जभसय (4-8) [कृतोद्यतिः स्मृतिरिति जाद्भसौ यः Jk. 2. 147] स्मृति.

जरजर [जरौ जरौ वदन्ति पञ्चचामरम् Vr. 3. 64. 4] पञ्चचामर, प्रमाण, वसन्तचत्वर, वसन्तचामर, विभावरी.

जरभर [जरौ भरौ च हंसाख्यम् Bh. 32. 321] हंसाख्य.

जसजस (6-6) [श्रुतौ जसजसा जलोद्धतगतिः Jk. 2. 127] जलोद्धतगति.

जससय [जूसौ स्यौ कोलः H. 2. 193] कोल.

ततजर [स्यादिन्द्रवंशा ततजै रसंयुतैः Vr. 3. 46] इन्द्रवंशा.

तततत [कामावतारस्तकारैश्चतुर्भिस्तु Jk. 2. 119] कामावतार, सारंगरूपक.

तभजर [धीरैरभाणि ललिता तभौ जरौ Vr. 3. 57] ललिता.

तभसय (4-8) [ज्ञाता श्रुतिर्गीतियातिभाक्तभौ स्यौ Jk. 2. 146] श्रुति.

तयतय (6-6) [त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः Chm. 2. 79] अब्जविचित्रा, मणिमाला, पुष्पविचित्रा.

तयमय (7-5) [वाहिनी त्यौ म्याद्वषिकामशराः P. 6. 42] वाहिनी.

नजजय (8-4) [अभिनवतामरसं नजजाद्यः P. 6. 27; Vr. 3. 64] अभिनवतामरस, कमलविलासिनी, तामरस, ललितपदा.

नजजर (6-6, 5-7) [भवति नजावथ मालती जरौ Vr. 3. 63] तति, मालती, यमुना, वरतनु.

नजभय (8-4) [इह नवमालिनी नजपरौ भ्यौ Vr. 3. 62; वसुसमुद्रैर्यतिः P. 6. 43] (7-5) [अर्कैसायकैश्छिन्ना M. M.] } नवमालिका, नवमालिनी, वनमालिनी.

ननजस [ननजसा इह कमललोचना Bh. 32. 225] कमललोचना.

नननन [नचतुष्कं तरलनयना Pp. 2. 137] तरलनयना.

ननभर [ननभरसहिताभिहितोज्ज्वला Vr. 3. 59] चलनेत्रिका, उज्ज्वला.

ननमय (8-4) [पुटो नौ म्यौ वसुसमुद्राः P. 6. 32] पुट.

ननमर [ललितमभिहितं नौ म्रौ नामतः Chm. 2. 87] तत, ललित.

ननरय (5-7) [भवति ननरयैस्तु कामदत्ता Jk. 2. 141] कामदत्ता.

ननरर (7-5) [ननररघटिता तु मन्दाकिनी Chm. 2. 75] गौरी, चञ्चलाक्षी, प्रमुदितवदना, मन्दाकिनी.

ननरर (7-5) [स्वरशरविरतिर्नौ रौ प्रभा Vr. 3. 64. 9] प्रभा.

नभजय (5-9) [नभजयैश्च मुखरं कलहंसा Jk. 2. 132] कलहंसा, द्रुतपद, मुखर.

नभजर [भुवि भवेन्नभजरैः प्रियंवदा Chm. 2. 82] प्रियंवदा, मत्तकोकिल.

नभनय [द्रुतपदं भवति नभनयाश्चेत् Chm. 2. 88] द्रुतपद.

नभभर [द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ Vr. 3. 48] द्रुतविलंबित, सुन्दरी, हरिणप्लुता, उज्ज्वला.

नयनय (6-6) [नयसहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा (भिद्रसै रसैः) Vr. 3. 51] कुसुमविचित्रा, गजललित.

नयरय (6-6) [कुमुदनिभा भवति नयरयैः Bh. 16. 40] कुमुदनिभा.

नरनर (6-6) [मता नरौ नरौ भिन्ना वज्रकोणैर्गुहाननैः P. 6. 27. 9] मता, बहुमता.